The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का एक अध्ययन

डॉ। प्रदीप चौहान
सहायक प्रोफेसर (शिक्षक–शिक्षा विभाग)
पृथ्वीराज चौहान पी.जी. कॉलेज
भींटी. मऊ. उत्तर प्रदेश

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***01.06.25***

*Accepted:****28.06.25***

Published: ***30/06/25***

Keywords: राष्ट्रीयशिक्षा नीति (2020), शिक्षकदृष्टिकोण ।

ABSTRACT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy2020 – NEP 2020) भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक बदलाव के रूप में उभरी है। यह नीति 21वीं सदी की चुनौतियों और वैश्विक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसमें शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता, लचीलापन, बहुभाषिकता, मूल्य–आधारित शिक्षा, डिजिटल तकनीक और आजीवन शिक्षा जैसे पहलुओं को प्रमुखता दी गई है। इस नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान आधारित नहीं, बल्कि कौशल आधारित, जिज्ञासु और नैतिक नागरिक बनाना है। साथ ही यह नीति शैक्षणिक स्वायत्तता, शिक्षक प्रशिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली में भी आमूलचूल परिवर्तन का संकेत देती है।

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षकों की दृष्टि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की क्या प्रासंगिकता है, वे इसके विभिन्न प्रावधानों को किस रूप में ग्रहण कर रहे हैं, और इसके कार्यान्वयन से संबंधित क्या संभावनाएँ और चुनौतियाँ अनुभव कर रहे हैं। शिक्षकों की भूमिका किसी भी नीति के सफल क्रियान्वयन में सबसे महत्वपूर्ण होती है। यदि शिक्षक स्वयं इस नीति को लेकर सकारात्मक, जागरूक और तत्पर नहीं हैं, तो इसकी प्रभावशीलता संदेहास्पद हो सकती हैं।अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश शिक्षकों ने NEP 2020 के उद्देश्यों की सराहना की, विशेष रूप से पूर्व–प्राथमिक शिक्षा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, 5+3+3+4 पाठ्य–संरचना, मूल्यांकन में सुधार, और शिक्षक शिक्षा को लेकर। वे मानते हैं कि यह नीति विद्यार्थियों को उनकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर देती है। डिजिटल साक्षरता, कला और खेल के समावेशन तथा कौशल विकास की दिशा में यह एक सकारात्मक कदम है।

शिक्षकों ने कुछ चुनौतियों की ओर भी संकेत किया। जैसे कि – नीति के प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण की आवश्यकता, संसाधनों की कमी, शिक्षक भर्ती की प्रक्रिया में पारदर्शिता, कार्यभार का संतुलन, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की विषमता, और डिजिटल डिवाइड। कई शिक्षकों को यह चिंता है कि नीति की अवधारणाएँ तो सराहनीय हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर उनके कार्यान्वयन के लिए आवश्यक ढांचा, बजट, प्रशिक्षण और समर्थन अभी पर्याप्त नहीं है।

यह अध्ययन निष्कर्षतः इस ओर इंगित करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, निरंतर प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता और प्रशासनिक सहयोग अत्यंत आवश्यक हैं। यदि इन पहलुओं पर समुचित ध्यान दिया जाए तो यह नीति भारतीय शिक्षा को वैश्विक मानकों तक ले जाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शिक्षकों की दृष्टि और अनुभव इस दिशा में मार्गदर्शन देने वाले मूल आधार हैं, जिनके सहारे NEP 2020 का वास्तविक स्वरूप आकार ले सकेगा।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रगति की नींव होती है। यह न केवल ज्ञान का संचार करती है, बल्कि नागरिकों में मूल्य, दृष्टिकोण और कौशल का विकास कर उन्हें समाजोपयोगी बनाने का कार्य करती है। भारत जैसे विविधता–सम्पन्न देश में शिक्षा का महत्व और भी अधिक हो जाता है। स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा नीति को दिशा देने के लिए समय–समय पर शिक्षा नीतियाँ बनाई गईं, जिनमें प्रमुख रूप से 1968, 1986 (1992 में संशोधित), और अब 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) शामिल हैं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। यह एक दूरदर्शी और व्यापक दस्तावेज है, जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक के हर पहलू को समाहित किया गया है। नीति का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता, नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करना है। यह नीति शिक्षा को मात्र परीक्षा और अंक आधारित प्रणाली से बाहर निकालकर अनुभवात्मक, बहुआयामी और समग्र बनाने पर बल देती है।NEP 2020 के प्रमुख पहलुओं में 5+3+3+4 संरचना, मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, बहुभाषिकता, लचीला पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा, और मूल्यांकन सुधार प्रमुख हैं। यह नीति शिक्षा को समावेशी और समतामूलक बनाने का संकल्प लेती है ताकि सभी वर्गों और समुदायों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।इस नीति में शिक्षकों की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। नीति स्पष्ट रूप से कहती है कि ÞNo reform is possible without the reform of the teacher-" अर्थात किसी भी शैक्षिक सुधार की सफलता शिक्षकों की गुणवत्ता, उनके दृ ष्टिकोण और उनकी सहभागिता पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से शिक्षकों की मानसिकता, उनके विचार, अपेक्षाएँ और आशंकाएँ नीति के क्रियान्वयन में निर्णायक सिद्ध होती हैं।

NEP 2020 का कार्यान्वयन एक बहुस्तरीय और दीर्घकालीन प्रक्रिया है। इसमें सरकार, शैक्षिक संस्थाएँ, प्रशासनिक निकाय, अभिभावक, और सबसे महत्वपूर्ण – शिक्षक –सभी की सहभागिता आवश्यक है। यदि शिक्षक इस नीति को समझते हैं, इससे सहमत हैं और इसे अपने शिक्षण–अभ्यास में लागू करने के लिए तत्पर हैं, तभी इसके उद्देश्यों की पूर्ति संभव हो सकेगी।वर्तमान शोध का उद्देश्य NEP 2020 के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। यह समझना आवश्यक है कि शिक्षक इस नीति को किस प्रकार देखते हैं – क्या वे इसे सकारात्मक परिवर्तन के रूप में स्वीकार करते हैं या उन्हें इसके अमल में कठिनाइयाँ, अव्यवहारिकताएँ या संसाधनों की कमी महसूस होती है। साथ ही यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि नीति के किन–किन पहलुओं को वे सबसे अधिक प्रभावशाली मानते हैं और किन क्षेत्रों में वे सुधार की आवश्यकता अनुभव करते हैं।

यह अध्ययन प्राथमिक के शिक्षकों के अनुभवों और दृष्टिकोण पर आधारित है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शैक्षणिक क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख हितधारकों – शिक्षकों – की समझ, समर्थन और भागीदारी इस नीति के क्रियान्वयन को कितना सफल बना सकती है।इस शोध का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि NEP 2020 एक दीर्घकालिक शैक्षिक योजना है, जिसका प्रभाव आने वाले कई दशकों तक भारतीय शिक्षा व्यवस्था और समाज पर पड़ने वाला है। शिक्षकों की सोच और तैयारी ही इस नीति को धरातल पर उतारने की वास्तविक कुंजी हैं।

शोध का उद्देश्य

- एनईपी 2020 के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के बीच संबंध की जांच करना।
- एनईपी 2020के प्रति पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलना करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया:
1-एनईपी 2020के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
2-एनईपी 2020 के प्रति पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतरनहीं है।

शोध विधि

समस्याओं की प्रकृति किसी भी शोध कार्य में उपयोग की जाने वाली विधि की उपयुक्तता को निर्धारित करती है। वर्तमान शोध मेंएनईपी 2020के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के बारे में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। समस्या की प्रकृति के कारण, अध्ययन का संचालन करने के लिए वर्णनात्मक शोध की वस्तुनिष्ठ सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन यूपी से संबद्ध स्कूलों में आयोजित किया गया है। यह शोध मऊ जनपद (उत्तर प्रदेश) के प्राथमिकबोर्डमेंकिया गया है। सभी स्कूलों से स्तरीकृत नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण तथा व्याख्या

1-एन.ई.पी. 2020 के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण के बीच संबंध की जांच करना।

डेटा विश्लेषण का उद्देश्य अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने और अनुसंधान परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए डेटा को जागरूकता और दृष्टिकोण के रूप में कम करना है।

तालिका नंबर एक
शिक्षक के दृष्टिकोण के बीच सहसंबंध, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक डीएफ (एन–2) साइनी का स्तर

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक	df (N-2)	स्तर का महत्व	
		0.05	0.01
r = -0.3277	98	.195	.254

यह अनुमान लगाया गया था कि शिक्षकों के एन.ई.पी. अंकों के प्रति दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

सहसंबंध गुणांक का प्राप्त मूल्य –0.3277है, जो उच्च सहसंबंध दर्शाता है और यह डीएफ–98 पर महत्व के लिए आवश्यक सहसंबंध गुणांक के मूल्य से अधिक है। इसलिए, यह मान महत्वपूर्ण है और शून्य परिकल्पना 0.05 पर स्वीकार की जा सकती है।

इसका मतलब है कि शिक्षक के दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के अंकों के बीच संबंध है।

2.एनईपी 2020 के प्रति पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलना करना।

पुरुष और महिला प्राथमिकविद्यालय के छात्रों के माध्य, मानक विचलन और टी–स्कोर से संबंधित डेटा का विवरण तालिका संख्या में दिया गया है

तालिका 1.2

एन.ई.पी. के प्रति पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में माध्य, मानक विचलन और टी–स्कोर

S.No.	Group	N	M	D (M1~M2)	टी–स्कोर		महत्व स्तर
1	पुरुष	50	15.68	6.30	मूल्य तलिकामूल्यकीगणना		
2	महिला	50	21.98		1.81	3.47	0.05 महत्व स्तर
							dt=98

निष्कर्ष:H0 : M1-M2= 0 महत्व के 0.05स्तर पर अस्वीकृत

H0 : M1-M2≠0 महत्व के 0.05स्तर पर स्वीकृत

व्याख्या:–

तालिका क्रमांक के अवलोकनसे 1.2में पाया गया कि पुरुष शिक्षकों का रवैया माध्य 15.68और मानक विचलन 8.69और महिला शिक्षकों का रवैया माध्य 21.98और मानक विचलन 9.44है। गणना t–मान 3.47है और t–मान 1.98है। चूँकि परिकलित t=मान, t–मान से अधिक है, इसलिए 0.05महत्व स्तर पर शून्य परिकल्पना खारिज कर दी जाती है।

उद्देश्य संख्या 2 की पूर्ति के लिए यह परिकल्पना की गई है कि "एनईपी 2020के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों के

दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है",0.05महत्व स्तर पर स्वीकार किया जाता है और शून्य परिकल्पना "में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" N.E.P 2020 के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण को अस्वीकार किया जाता है।

Corresponding Author: pchauhan3632@gmil.com

निष्कर्ष:

वर्तमान अध्ययन एन.ई.पी. 2020के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन था। नमूने में यूपी के 100 छात्र शामिल थे। प्राथमिकविद्यालय बोर्ड. पिछला अध्याय डेटा के विश्लेषण, परिणाम और चर्चा के लिए समर्पित था। वर्तमान अध्याय में अध्ययन के निष्कर्षों को गिनाने और भविष्य के शोधों का सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इन उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के क्रम में नीचे दिये गये हैं।

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

1 शिक्षक के दृष्टिकोण अंकों के बीच नकारात्मक संबंध ळें

2 पुरुष और महिला प्राथमिकविद्यालयों के छात्रों की जागरूकता और दृष्टिकोण के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर है या महिला छात्रों को पुरुष छात्रों की तुलना में जागरूकता और दृष्टिकोण में उच्च अंक प्राप्त होते हैं।

वर्तमान शोध एन.ई.पी. 2020के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन के लिए आयोजित किया गया था। शिक्षक जागरूकता और दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।माता–पिता को स्कूल की सभी आवश्यकताएँ प्रदान करनी चाहिए और साथ ही अपने बच्चों की शैक्षिक और गैर–शैक्षिक गतिविधियों पर नियंत्रण और संतुलन बनाए रखना चाहिए। शिक्षकों और छात्रों के बीच संभावित अंतर को नियमित रूप से विशेष रूप से महीने में एक बार अभिभावकों की बैठक बुलाकर दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। कुछ अवधि निर्धारित की जानी चाहिए जिसमें शिक्षक और छात्र गैर–शैक्षिक गतिविधियाँ कर सकें ताकि अंतर को कवर किया जा सके और साथ ही यह भी पता चल सके कि शिक्षक भी उनके शुभचिंतक हैं।

ग्रन्थसूची

1. कपिल, एच0के0 (1995), अनुसंधानविधियाँ, इलाहाबाद: भार्गव भवन।
2. कोली, लक्ष्मीनारायण (2003), रिसर्च मेथोडोलॉजी, आगरा: वाई0के0 पब्लिशर्स।
3. कुमार, सुरेश, के (2016). ऐकेडमिक ऐचीवमेंट इन रिलेशन टू देयर एंग्जायटी एंड डिप्रेशन, हाई स्कूल, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 2(3), पृ. 25-27।
4. गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2004), शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
5. गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2010), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
6. गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2003), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
7. फात्मा, फरीन (2015). ए स्टडी ऑफ एंग्जायटी ऑफ एडोलसेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेंडर, लोकेलटी एंड ऐकेडमिक ऐचीवमेंट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च।

Corresponding Author: pchauhan3632@gmil.com

8. बंगा एवं शर्मा (2016). ए **स्टडी** ऑफ ऐकेडमिक एंग्जायटी ऑफ सेकेंडरी स्कूल **स्टूडेंट्स** इन कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट इन रिलेशन टू **जेंडर**, लोकेट एंड सोशल केटेगरी, इंटरनेशनल **मल्टीडिसिप्लिनरी** ई-जर्नल, इंटरनेशनल पियर-रिव्यूड, **रिफर्ड** जर्नल, 5(4), पृ. 46-55।
9. बंगा, चमनलाल (2016). ऐकेडमिक एंग्जायटी ऑफ एडोलसेंस बॉयज एंड गर्ल्स इन हिमाचल प्रदेश, द ऑनलाइन जर्नल ऑफ न्यू **होरिजन्स** इन एजुकेशन, 6(1), पृ. 7-12।
10. बिहारी, साकेत (2014). ऐकेडमिक एंग्जायटी अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स विद **रेफरेन्स** टू जेंडर, हैबिटेट एंड टाइप ऑफ स्कूल, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल **रिसर्च**।

Corresponding Author: pchauhan3632@gmil.com